सिद्ध क्षेत्र/जन्मभूमि

राजगिरजी

बिहार

नाम एवं पता	**श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र, राजगिर** **पोस्ट – राजगिर, जिला – नालंदा, (बिहार) पिन – 803 116**	
टेलीफोन	06112 – 255235, 255783	
क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ	**आवास**	कमरे (अटैच बाथरूम) – 50 (बिना बाथरूम) – 60 हाल – 02 (यात्री क्षमता–55), गेस्ट हाऊस – नहीं **यात्री ठहराने की कुल क्षमता – 1000.**
	भोजनशाला	नियमित, सशुल्क
	औषधालय	है (आयुर्वेदिक) **पुस्तकालय** – है
	विद्यालय	नहीं **एस.टी.डी./पी.सी.ओ.** – है
आवागमन के साधन	**रेलवे स्टेशन**	राजगिर – 1 कि.मी.
	बस स्टेण्ड	राजगिर
	पहुँचने का सरलतम मार्ग	गया या पटना से रेल द्वारा, राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 31 से नवादा, हिसुआ या बिहारशरीफ होकर सड़क मार्ग से
निकटतम प्रमुख नगर	बिहारीशरीफ – 22 कि.मी., गया – 65 कि.मी., पटना – 100 कि.मी.	
प्रबन्ध व्यवस्था	**संस्था**	श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र राजगिर (बिहार प्रान्त तीर्थक्षेत्र कमेटी), देवाश्रम – महादेवा रोड, आरा
	अध्यक्ष	साहू श्री शरदकुमार जैन, मुम्बई (022 – 22871914)
	मंत्री	श्री अजयकुमार जैन (093343 – 96920)
	प्रबन्धक	श्री सरोजकुमार जैन (06112 – 255235)
क्षेत्र का महत्व	**क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्या**	**: 12 (पहाड़ पर 10, तलहटी पर 2)**
	क्षेत्र पर पहाड़	**: हैं**

ऐतिहासिकता : यहाँ भगवान मुनिसुव्रतनाथजी के गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञान कल्याणक हुए हैं, अतः जन्मभूमि है। यह भगवान महावीर की प्रथम (देशना) स्थली है। यहाँ उनके 14 चातुर्मास हुऐ थे। यहाँ स्थित पाँच पहाड़ियों से अनेक मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया, इसलिये इस सिद्धक्षेत्र माना गया है। लाल मन्दिर के प्रांगण में गणिनी ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से भगवान मुनिसुव्रतनाथ की 12 1/4′ की प्रतिमा कमलासन पर विराजमान की गई है।

विशेष जानकारी : राजगिर जैन धर्म के अतिरिक्त हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई एवं बौद्ध धर्मों का संगम स्थल है। प्रकृति प्रदत्त गर्म जल के झरनें यहाँ के विशेष आकर्षण हैं। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र कुण्डलपुर – 15 कि.मी., पावापुरी – 35 कि.मी., गुणावाँ – 40 कि.मी., गुलजारबाग (पटना) – 100 कि.मी.